इकाई–2 भोजपुरी भाषा आ कैथी लिपि

इकाई के रूपरेखा

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 लिपि के सत्ता : भोजपुरी कैथी लिपि
2.3 भोजपुरी भाषा आ कैथी लिपि
2.4 भोजपुरी कैथी लिपि वर्णमाला
2.5 आदर्श लिपि आ भोजपुरी कैथी लिपि
2.6 भोजपुरी कैथी लिपि : प्रासंगिकता आ महत्त्व
2.7 बोध–प्रश्न
2.8 उपयोगी पुस्तक के नाम

2.0 उद्देश्य

हिन्दी 'लिपि' अंग्रेजी 'Script' के पर्याय ह। आदमी कवनो भाषा में बोलेला बाकिर ओकर सब बात हवा में उड़ जाला। ऊ भूल जाला, थोड़िके देर में, कि पहिले ऊ का बोलले रहे। ई क्षणिक होखेला। एकरा स्थायीत्व देवे खातिर ओकरा लिखल जाला। बाकिर लिखि त का में लिखि? एहि समस्या के समाधान खातिर लिपि के आवश्यकता महसूस कइल गइल रहे। ई चलते हम कह सकिला कि लिपि सोद्देश्य होखेला।

भाषा लिपि से पहिले उद्‌भूत भइल ह। लिपि ना खाली कवनो भाषा के स्थायीत्व देला बलुक ओकरा देश आ काल के सीमा से पार भी पहुँचावेला। एक देश आ काल के भाषा दूसरा देश आ काल में चहुँप जाला। ई चहुँपावे के काम अकेले लिपि ही कराबेला। कहल जा सकेला कि लिपि भाषा के देश आ काल के बंधन से मुक्त करि दिहले बा। ई देश के भाषा ऊ देश में फैलल–पसरल ह। ई लिपि के चलते संभव भइल बा। फेर कतना पुरान भाषा संस्कृत आझ भी आपन वास्तविक स्वरूप में हमरा आँखि के सामने लउकता। एह सब क्रिया–प्रक्रिया लिपि के चलते संभव भइल बा। ई तरे लिपि का बारे में जानल सोद्देश्य ह।

जइसे भाषा के उत्पत्ति का बारे में कवनो निश्चित मत नइखे, ओइसे लिपि के उत्पत्ति का बारे में भी कवनो निश्चित मत नइखे। ई तरे एकर उद्देश्य अउरी महत्त्वपूर्ण हो जाला। लिपि के उत्पत्ति भाषा के उत्पत्ति के बहुते बाद में भइल ह। भाषा के उत्पत्ति आझ से लाखन बरिस पहिले भइल ह बाकिर लिपि के उत्पत्ति आझ से पाँच–छः हजार बरिस से पहिले ना जाला। सच बात त ई ह कि भाषा के संबंध मानव–जीवन से ह बाकिर लिपि के संबंध मानव–सभ्यता के विकास से। लिपि के बिना भी मानव के काम–धाम चलि सकेला बाकिर भाषा के बिना ना चलि सकेला। आझो सउँसे संसार में कतना पिछड़ल, असभ्य, दुर्दांत जाति के लोग बाड़न सन जेकरा लिखे–पढ़े से कवनो मतलब नइखे बाकिर बोली बोल के उनुका सभ के काम चलता। एह तरे लिपि का बारे में जानल सोद्देश्य लागेला।

तइयो लिपि के महत्त्व से केकरो इन्कार कइल ना हो सकेला काहे कि ई कवनो भाषा आ साहित्य के संरक्षण देबेला आ कालजयी भी बनाबेला। आदमी के मनोभावन के लिपिबद्ध क के ओकरा रक्षा प्रदान करेला। लिपि ना रहीत त भाषा भी स्थायीत्व ना पाबित। ई तरे लिपि का बारे में जानल, अध्ययन कइल उद्देश्य भरल ह।

लिपि लेखन–कला होखेला। भाषा के सभ ध्वनियन के लेल संकेत – चिह्नन के व्यवस्था कइल ही लिपि कहाला। एकरा लेखन–कला के विकसित ज्ञान का वाचक भी कहल जाला। मानव–सभ्यता के प्रारंभिक अवस्था से ही लिपि के उद्‌भव के इतिहास प्रारंभ हो जाला। ई चलते एकरा बारे में गंभीर अध्ययन, मनन आ चिंतन कइल उद्देश्य विहीन ना हो सकेला।

सभ से उन्नत लिपि के ही वैज्ञानिक लिपि कहल जाला। ई तरे एकरा में किछुओ विशेष गुण भी होखेला जे एकरा दूसर लिपियन सभ से अलगा–बिलगा करेला। भोजपुरी कैथी लिपि में ई सभ गुण के समाहार बा। जइसे – लिपि–चिह्न के नाम ध्वनि के अनुरूप, एगो ध्वनि खातिर एक तरह के लिपि–चिह्न, लिपि–चिह्नन के पर्याप्तता, ह्रस्व आ दीर्घ स्वर के लेल अलग–अलग चिह्न, मात्राा सभ के प्रयोग, नागरी के व्यंजन–चिह्नन के आक्षरिकता, उच्चारण कइला प एक नियन लिपि–चिह्नन में आकृति के समानता, सुपठनीयता अर्थात जवन लिखल जाला, उहे पढ़ल जाला आदि–आदि। भोजपुरी कैथी लिपि एह सभ गुणनन के खान बा, एह सब गुणन से भरल–पूरल बा। ई चलते भोजपुरी कैथी लिपि का बारे में जानल सोद्देश्य पूर्ण ह।

एह दुनिया में कवनो अइसन चीज नइखे जे सभ दृष्टि से पूर्ण होखे। भोजपुरी कैथी लिपि भी एकर अपवाद ना हो सकेला। तइयो एकरा में गुणे अधिका बा आ अवगुण दोसर लिपियन के बनिस्वत कम बा। अच्छाई इया गुण त एकदम से सापेक्ष होखेला। जेकरा हमनी का निरपेक्ष कल्पना इया श्रेष्ठता कहीला जा, ऊ त कल्पना भर ह। ई तुलनात्मक आधारभूत सत्य के धेयान में राखि के हमनी का सगर्व कहि सकीला जा कि भोजपुरी कैथी लिपि दूसर लिपियन के अपेक्षा अधिका गुण से भरल, छात्र–लोकनि के लेल अध्ययन कइल जरूरी उपयोगी आ वैज्ञानिक ह। एहि उद्देश्य के पूर्त्ति खातिर एकरा पाठ्यक्रम में राखल गइल बा।

ई सच स्वीकारल गइल बा कि टंकण–सुविधा ना रहला के चलते ई लुप्त भ गइल बा आ एकर जगहा प देवनागरी लिपि आ के बइठ गइल बा। बाकिर हमार पुरखन जवन भोजपुरी कैथी लिपि के बनाबे आ ओकर मानक रूप निर्धारित कइला में आपन श्रम, संसाधन आ समय के पसीना के जगहा पर आपन खून के बहइले रहीं, ओकर संरक्षण हमनी का वंशज ना कर पबलीं। एहि महत् उद्देश्य के पूर्त्ति खातिर एकरा पाठ्यक्रम में जगहा दिहल गइल बा। छात्र लोगन आपन पुरखन के कइल–धइल अइसन पुनीत कारज से भली–भाँति परिचित भके उनुका प्रति आपार श्रद्धा–निवेदन करि सकें। एकर अध्ययन–अनुशीलन अउरी कुछ ना होके पुरखन के प्रति दिहल गइल एगो सारस्वत श्रद्धांजलि भर ह।

विश्व के कवनो कोना में प्रयुक्त वर्णमाला ओतना वैज्ञानिक नइखे जतना कि भोजपुरी कैथी वर्णमाला ह। ई एकबैग कवनो मेधावी आदमी के मेधा के उपज नइखे। एकरा बनाबे आ मानक रूप में स्थापित करे में हजार–हजार वर्षन के समय लागल ह। एकरा आर्य जाति के मेधा के परिचायक मानल जा सकेला। ब्राह्मी लिपि से निःसृत भइला के चलते इहो लिपि के लेखन बायाँ से होके दायाँ के ओरिया होखेला। एकर वर्णमाला देवनागरी लिपि के वर्णमाला लेखा वैज्ञानिक बा। एहिजा एक ध्वनि के उच्चारण खातिर एक वर्ण के प्रयोग होखेला। जइसे जदि हमनी का कंठ्य ध्वनि 'क' के उच्चारण करीला त ऊ एगो निश्चित वर्ण ह। एकरा जगहा पर हमनी का दोसर कवनो वर्ण के प्रयोग नइखीं कर सकत। इहे भोजपुरी कैथी लिपि

के अमूल्य विशेषता ह। रोमन लिपि में अइसन बात नइखे। एह रोमन लिपि में कंठ्य ध्वनि 'क' के लेल 'K' वर्ण के प्रयोग कइल जाला। फेर एगो 'क' कंठ्य ध्वनि खातिर ओहिजा कतना वर्णन के प्रयोग कइल जाला। जइसे – Kite, Cow, Ox, Character, Cukoo, queen आदि अर्थात K, c, x, ch, cuk, q ... भोजपुरी के छात्र लोगन खातिर, उनुकर ज्ञानवर्द्धन खातिर एकरा पाठ्यक्रम में समायोजित कइल गइल बा। ई से एकर उद्देश्य बहुत महान बाटे।

भोजपुरी कैथी लिपि के देखला से स्पष्ट हो जाला कि ई भारतीय भूमि के उपज ह। एकर निर्माण भी भोजपुरी भाषा के सभ ध्वनियन के धेयान में राखि के कइल गइल बा। एकरा लेखा ध्वनि–संकेत के लिपिबद्ध करे के क्षमता अउरी कवनो लिपि में नइखे। लिपि के रूप–परिवर्तन होइत रहेला। एकर अनेक कारण भ' सकेला। एक्के गो लिपि कालांतर में एगो इया एगो से अधिका कारण से भी आपन रूप बदल ले सकेला। भोजपुरी कैथी लिपि के साथे भी अइसन घटित हो सकेला। एह सब उद्देश्यन के जानकारी दिहला खातिर एकरा पाठयक्रम में राखल गइल बा। आजुक आधुनिक युग में प्राचीनता के दिग्दर्शन एकर उद्देश्य ह।

भारतीय लिपि के प्रकांड विद्वान गौरीशंकर हीराचंद ओझा आपन एतद् विषयक प्रसिद्ध पुस्तक 'प्राचीन लिपिमाला' में देश–विदेश के लिपियन पर गंभीर अध्ययन–अनुशीलन कइले बानीं। एह पुस्तक में ऊहाँ के कैथी लिपि का बारे में भी लिखले बानीं। एह कैथी लिपि प्राचीन नगरी लिपि से निःसृत भइल बा, ऊहाँ के एह पुस्तक में बतबले बानीं। ई कैथी लिपि के अंतर्गत ही भोजपुरी कैथी लिपि, मगही कैथी लिपि आ मैथिली कैथी लिपि आबेली सन। ई चलते भोजपुरी कैथी लिपि के पाठ्यक्रम में समायोजन कइल छात्र–हित में बा। आजुक नवका उमीर के छात्र–छात्रा लोकनि के आपन विरासत का बारे में ज्ञानवर्द्धन कइल जरूरी ह। एह तरे ई पाठ के पाठ्यक्रम में राखल सोद्देश्यपूर्ण ह।

2.1 प्रस्तावना

भोजपुरी कैथी लिपि आझ लुप्त भ गइल ह। ई हमनी का एगो धरोहर ह जे पुरखन के दिहल एगो अमूल्य विरासत ह। एकर उत्पत्ति कइसे भइल रहे, ई कइसे विकसित भइल रहे, एकर वर्णमाला कइसन बा, एकर लोक–व्यवहार कइसन रहे, ई कइसे लुप्त भ गइल आदि सभ का अध्ययन आ अनुशीलन एह पाठ में प्रस्तावित बा। भोजपुरी क्षेत्रन के लेखन–कला से परिचित भइला के साथे–साथ एकर इतिहास आ सभ्यता–संस्कृति के अध्ययन–अनुशीलन भी एहिजा अपेक्षित बा। एह क्रम में प्राचीन भारतीय इतिहास के तथ्यन आ आधुनिक भोजपुरी क्षेत्रन के इतिहास के तुलनात्मक अध्ययन आ अनुशीलन एकरा में देखे के मिलि सकेला। फेर इतिहास आ संस्कृति के आपुसी संबंध पर स्वतंत्र आउर मौलिक दृष्टि से दिहल विचार भी एहिजा देखेला मिलि जा सकेला। भोजपुरी भाषा–भाषी क्षेत्रन के साथे भोजपुरी भाषा के अतीत के वर्त्तमान के संदर्भ में व्याख्यायित क के एगो बहुआयामी दृष्टि भी एहिजा प्रस्तुत कइल जाइत। ऊ भूलल–बिसरल इतिहास के एक तरे पुनर्लेखन करि के एहिजा ओकर प्रस्तुतीकरण भी प्रस्तावित बा। ई प्रयास निश्चित रूप से नयकी पीढ़ी खातिर ज्ञानवर्द्धक सामग्री भ सकेला काहे कि मानवीय कल्पना सभ के जाँचला–परखला के शक्ति आ आँखि उनुका लोगनि के मिलि सकेला। एह सभ प्रस्तावित योजना एहिजा साकार कइल जाइत।

भोजपुर क्षेत्र के इतिहास, संस्कृति, कला, साहित्य आउर भोजपुरिया लोगन के मानवीय संवेदना सभ के संतुलन के दिग्दर्शन कराबल ही एह पाठ के प्रस्तावित योजना ह। भारतीय लिपियन आ विश्व के लिपियन के सांगोपांग विवेचन आ सभका बड़हन प्रस्तुतीकरण के ज्ञान आजुक छात्र लोगन खातिर उपयोगी, ज्ञानवर्द्धक आ हित संसाधन भ सकेला। हमार पुरान भारत के ऋषिमुनि, चिंतक, शास्त्रवेता, खगोल शास्त्री आदि कतना सुधि साधक रहनीं ह एकरा से नयकी पीढ़ी के लोगन के अवगत भइल जरूरी बा। ओह लोगन कतना ऊर्वर, तीक्ष्ण मस्तिष्कवान, ऊर्जावान आदि रहनी सन जे सउँसे विश्व मानव–समुदाय के न खाली ज्योतिषीय, खगोलिय, वैज्ञानिक अंक प्रणाली आ दशमलव प्रणाली, दर्शन आ अध्यात्म देले रहीं सन बलुक भाषा आ ओकरा लिपिबद्ध करेवाला लिपि भी देले रहीं सन। ई सब से परिचित कराबल ई पाठ में प्रस्तावित ह ताकि छात्र लोगन में ज्ञानवर्द्धन आ आत्मगौरव के भावना दूनू विकसित भ सके।

एहिजा ई बताबल जाइत कि आपन देश के सभ लिपियन के मूलाधार ब्राह्मी लिपि ही ह। आझ आपन देश में दूगो आउर विदेशी लिपियन के प्रचलन भ रहल बा। एकर नाँव ह – रोमन लिपि आ उर्दू लिपि। रोमन लिपि इंगलैंड से अंग्रेजन आ उर्दू लिपि अरब देशन से मुसलमान लोगन एहिजा लइले बाड़न सन। बाकिर ई दूनू लिपियन में ओतना वैज्ञानिकता आ निर्दोषपन नइखे जेतना कि आलोच्य भोजपुरी कैथी लिपि में बाटे। ई सभ के तुलनात्मक अध्ययन आ अनुशीलन कइल भी एहिजा प्रस्तावित ह। हमनी का भोजपुरी कैथी लिपि के एह पाठ में ई अध्ययन–अनुशीलन भी करब जा कि उच्चरित भाषा सभ के आपन सीमा ह त लिखित भाषा सभ के भी आपन सीमा ह। लिखित भाषा उच्चरित भाषा के स्थूल सांकेतिक रूप होखेला। एकरा स्थूल ई से कहल जा सकेला कि भाषा के उच्चरित में बल, तान इया टोन, स्वर आदि के सहारे अर्थ में जवन विशेषता लाबल जाला, ऊ सब लिखित भाषा खातिर असंभव बा। जइसे – लिखित भाषा में एगो वाक्य ह – 'रउआ त बड़ी सुंदर बानी।' एकर सीधा अर्थ बाटे कि 'रउआ बड़ी सुंदर हईं।' बाकिर उच्चरित भाषा में बल, तान इया टोन, स्वर आदि से एकर दूगो अर्थ हो सकेला – एगो सीधा अर्थ होखी कि 'रउआ बड़ी सुंदर हईं' आउर दूसर अर्थ इहो हो सकेला कि 'रउआ कुरूप बानीं'। कवनो लिपि समान भोजपुरी कैथी लिपि में भी अतना शक्ति आ सामर्थ्य नइखे जे ई दूनू अर्थ के अभिव्यंजित करि सके। ईतरे हमनी का एहिजा देखि सकिला जा कि भोजपुरी कैथी लिपि भी दोसर भारतीय लिपियन से भिन्न नइखे। ध्वनि त एक्के गो होला बाकिर ओकर अर्थ एक नियन ना होखेला। एह सब के पाठक आ छात्र लोगन के ज्ञानार्जन आ दिग्दर्शन कराबल ही एह पाठ में प्रस्तावित ह।

2.2 लिपि के सत्ता : भोजपुरी कैथी लिपि

आझ लिपि के जवन विकसित रूप हमनी का देख रहनी ह जा, ओकरा देखि के लिपि के प्रारंभिक रूप के कल्पना कइल कठिन लागता। बाकिर एह लिपियन के इतिहास बता रहल बा कि एहनी के विकास के भी सोपान रहल ह। एकरा मुख्यतः तीन विभाग कइल जा सकेला – 1. चित्र लिपि, 2. भाव–लिपि आ 3. ध्वनि–लिपि।

चित्र–लिपि लिपियन के इतिहास में सभ से प्राचीनतम आ प्रारंभिक लिपि ह। एह में आदमी जवन वस्तु इया भाव के लिपिबद्ध करल चाहत रहे, ओकर चित्र बना देत रहे। बाकिर एकरा बनाबे में अधिका समय लागत रहे आ ओकरा लेल कतना संकेत के प्रयोग कइल जात

रहे, जेकरा इयाद करल भी कठिन रहे आ दोसरा के समझल त आउर कठिन रहे। फेर यह लिपि में स्थूल वस्तुअन के त संकेत के सहारे लिपिबद्ध करा दिहल जात रहे बाकिर सूक्ष्म वस्तुअन खातिर अगली–बगली झाँके के पड़त रहे। एह तरे ई तनिको सर्वग्राह्य लिपि ना रहे। ई संसार के सबसे पुरान लिपि भा लेखन–कला ह। प्राचीन मिश्र, चीन, अमेरिका आदि देशन में एकर प्रमाण आजुयो देखे के मिलेला। सैंधव–सभ्यता के मुहरन में चित्र के सहारे भाव प्रकट कइल गइल ह। एकर प्रयोग आजुयो दिवाल–लेखन में भ रहल ह।

भाव–लिपि चित्र–लिपि के विकसित रूप ह। एकरा में चित्र–लिपि के अपेक्षा अधिका संक्षिप्त रूप का प्रयोग होत रहे। पहिले के पूरा चित्र के जगहा प बाद के आंशिक अंकन निश्चित रूप से लाभप्रद भइल रहे। बाकिर एह में प्रयुक्त संकेत ओहि समाज खातिर उपयुक्त रहे, जवन समाज एह से पूर्व परिचित रहे। दोसर समाज एकरा ना समझत रहे। ई संकेत चित्र ना होइके चित्र से बनल भाव भर रहे। आदमी के प्रगतिशील सुभाव एकरो से संतुष्ट ना भइल त दोसर लिपि के खोज में लाग गइल। एगो अइसन लिपि के खोज में लाग गइल जेकरा में ध्वनि लिपिबद्ध हो सके।

लिपि के विकास में ध्वनि लिपि सबसे बड़हन उपलब्धि ह। एह में चित्र आ भाव से ऊपर उठि के ध्वनि के लिपिबद्ध करे के क्षमता विकसित कइल गइल ह। ध्वनि–लिपि के उदाहरण के रूप में भोजपुरी कैथी लिपि, देवनागरी लिपि, रोमन लिपि, अरबी लिपि आदिके लिहल जा सकेला। भोजपुरी कैथी लिपि देवनागरी लिपि नियन वर्णभूलक लिपि ह। एह में एक सिलेबल में ओतना ध्वनियन सभ के गणना होखेला, जेतना के एक साथि उच्चारण कइल जा सकेला। एह दृष्टि से भोजपुरी भाषा के शब्द 'एह सभ'; 'दूर तक'.... के उदाहरणार्थ देखल जा सकेला। ई में सिलेबल के दृष्टि से 'एह्' आ 'सभ्' दूगो सिलेबल ह बाकिर वर्ण चार गो ह। एह दृष्टि से भोजपुरी कैथी लिपि के सिलेबिक लिपि ना मानल जा सकेला। कवनो लिपि के संबंध खाली यंत्र से ही ना होखेला। टंकण यंत्र में ना रहला से ई लिपि लुप्त भइल ह।

विश्व के पुरान लिपियन में कुछ प्रमुख नाँव ह – 1. सुमेरी लिपि, 2. बाबुली लिपि, 3. अरमाई लिपि, 4. शंख लिपि, 5. खरोष्ठी लिपि, 6. चित्र लिपि, 7. ब्राह्मी लिपि आदि। चित्र लिपि का बारे में हमनी का पहिले ही चर्चा कर चुकल बानी। ई लिपि आकृतिजन्य आवचक्षुक होला।

1. सुमेरी लिपिः तीन हजार ई॰ पू॰ में दजला–फरात नदियन के तट पर सुमेरी संस्कृति उपस्थित रहे। उनुका लेखन–कला के ज्ञान भी रहे। ई एगो ध्वन्यात्मक लिपि रहे। ई बहुत दूर तक फैलल–पसरल लिपि रहे। विश्व में प्रयोग होखे बालन सभ लिपियन के ई जननी रहे। इहे चलते एकरा बारे में लिपि के विद्वान जानकार डॉ॰ भगवत शरण उपाध्याय लिखले बानीं कि विश्व भर में प्रयुक्त होखे बालन सभ लिपियन मूलतः सुमेरी ही ह। एह लिपि से ही बाबुली, असूरी आदि लिपि–चिह्न निः सृत ह। एह लिपि में दायाँ से बायाँ ओरिया लिखाला।

2. बाबुली लिपिः ई सुमेरी लिपि से निःसृत ह। सुमेरी के नगर सभ पर साभी बाहुबलियन अधिकार क लेले रहे। पहिले त ऊ सब सुमेरी लिपि के अपनबले रहे बाकिर बाद में चलि के ऊहाँ सब एकरे में हेर–फेर क के एगो नवका लिपि बना लेले रहे जेकर नाम बाबुली लिपि दिहल गइल रहे। बाद में असूरन सब बाबुली साम्राज्य प अधिकार क लेले रहे।

ई सभ के साम्राज्य जतना आगा बढ़त गइल, ओतना बाबुली लिपि के भी विस्तार होइत गइल। एकरा नामो बदलल।

3. अरमाई लिपिः सुमेरी–बाबुली लिपि भा लेखन–कला के ईरान के सम्राटन अपनबले रहे। बाकिर ऊ सभ एकर रूप बदल देले रहे। नवका रूप के लेखन–कला के नामकरण 'अरमाई' कइल गइल रहे। ईरानी सम्राट् द्वारा के अभिलेखन में अरमाई लिपि देखे खातिर मिलि जाला। मगध साम्राज्य के सम्राट् अशोक महान के अधिकार एहिजा भी रहे। एकर पश्चिमोत्तर भाग में इहे अरमाई लिपि में उनुकर अभिलेखन लिखाइल रहे।

4. शंख लिपिः शंख नियन आकृति भइला के चलते एह लिपि के नामकरण शंख लिपि कइल गइल रहे। ई मगध साम्राज्य के गुप्त वंशन के सम्राट्न द्वारा प्रयुक्त लिपि ह। समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, कुमार गुप्त आदि सम्राट्न एकरा विस्तार देले रहीं। बिहार राज्य के वर्तमान पटना में गुप्त साम्राज्य के राजधानी रहे। एहिजा आझो एह लिपि में लिखल बहुते साक्ष्य उपलब्ध ह।

5. खरोष्ठी लिपिः एकरा अरमाई लिपि के दूसरका रूप भी कहल जाला। एकर अक्षर खर (गदहा) के ओष्ठ नियन होखेला। केहू–केहू एकरा ऊँट के ओष्ठ लेखा भी मानेलन। इहे चलते एकर नामकरण खरोष्ठी कइल गइल बा। एह लिपि में भी दायाँ से बायाँ के ओरिया लिखल जाला। मगध साम्राज्य के सम्राट् के कतना अभिलेख एह लिपि में लिखल मिलेला। एह लिपि के प्रयोग उत्तर–पश्चिम भारत में होत रहे। शहबाज गढ़ी (पंजाब) आ मनसेरा (पंजाब के हजरा जिला) में अशोक के ढेरमनी अभिलेख इहे लिपि में लिखल मिलेला। वस्तुतः ई एगो विदेशी लिपि ह। मगध साम्राज्य देश–विदेश तक फैलल रहे। इहे चलते एकर प्रचार–प्रसार भारत में भी भइल रहे। कतना लोग एकरा सामी वर्ग के कवनो लिपि से निः सृत मानेलन त कतना लोग एकरा अरबी लिपि से उद्भूत मानेलन। एह लिपि वर्ण के संख्या 37 ह। ई सब वर्ण आर्य भाषा के सभ ध्वनियन के लिपिबद्ध ना करि सकेला। फेर एह में ह्रस्व आ दीर्घ के भेद भी नइखे। ई में संयुक्ताक्षर भोजपुरी कैथी लिपि लेखा ना लिखाला। एकर कवनो संबंध ब्राहमी लिपि से नइखे।

6. ब्राहमी लिपिः ब्रह्मा के द्वारा बनाबल गइल मानि के एकर नामकरण ब्राहमी कइल गइल बा। संस्कृत भाषा में ब्राह्मी शब्द के प्रयोग भाषा के लेल भी कइल गइल ह – 'ब्राहमी तु भारती भाषा गोर्वाण् वाणी सरस्वती' (अमरकोश, शब्द वर्ग 1)। तइयो एकर उद्गम का बारे में विद्वान लोकनि का बीच में मतैक्य ना ह। प्रसिद्ध विद्वान गौरीशंकर हीराचंद ओझा कहले बानी कि ब्राह्मी लिपि सर्वतोभावेन भारतीय लिपि ह आ एकर संबंध कवनो दोसर लिपि से ना जोड़ल जा सकेला। ऊहाँ के लिखले बानीं – ''मनुष्य की बुद्धि में सबसे बड़े महत्त्व के दो कार्य – भारतीय ब्राह्मी लिपि और वर्तमान शैली के अंकों की कल्पना है। इस बीसवीं शताब्दी में भी हम संसार की बड़ी उन्नतशील जाति की लिपियों की तरफ देखते हैं तो उनमें उन्नति की गंध भी नहीं पाई जाती। कहीं तो ध्वनि और उसके सूचक चिह्नों में साभ्य ही नहीं है जिससे एक ही चिह्न से एक से अधिक ध्वनियाँ प्रकट होती हैं, और कहीं एक ही ध्वनि के लिए एक से अधिक चिह्नों का व्यवहार होता है और अक्षरों के लिए कोई शास्त्रीय क्रम ही नहीं है।''

गौरीशंकर हीराचंद ओझा, प्राचीन लिपिमाला, भूमिका, पृ॰ 7

ब्राहमी लिपि के भारतीयता पर कवनो प्रश्न–चिह्न ना लगाबल जा सकेला। एकर उत्कृष्टता आ वैज्ञानिकता भी जग जाहिर ह। ओझा जी, के उपर्युक्त वक्तव्य रोमन लिपि, अरबी लिपि, चीनी लिपि आदि के बारे में कहल गइल ह। ब्राहमी लिपि बायाँ से दायाँ ओरिया लिखल जाला। एकर संकेत भी पूर्ण आ व्यापक ह। एकर वर्णन के संख्या 63–64 तक चहुँप जाला। स्वर आ व्यंजन के विन्यास भी पूरा आउर वैज्ञानिक ह। स्वर आ व्यंजन दूनो अलग–अलग बाड़न सन। स्वर में भी पहिले मूल स्वर, तब संयुक्त स्वर, व्यंजन के स्थान आउर प्रयत्न के अनुसार अइसन वर्गीकरण भइल ह जेकरा नियन विश्व के कवनो लिपि में देखे के ना मिलेला। एह सभ के देखला के चलते ही, न चाह के भी, मैक्डोनल के लिखे पड़ल ह– "It not only respresents all the sounds of the Sanskrit language, but is arranged on a thoroughly scientific Method. We Europeans, on the other hand, 2500 years later, and in sicentific age, still employ an alphabet which is not only in adequate to reprsent all the sounds of our languages, but even preserves the random order in which vowels and consonants are fumbled up as they were in the Greek adoption of the primitive Semitic arrangement of 3000 years ago."

A.A. Maconell, A History of Sanskrit Literature, P. 17.

गौरीशंकर हीराचंद ओझा ब्राह्मी लिपि के दूगो श्रेणी मानले बानीं – उत्तरी शैली आ दक्षिणी शैली। उत्तरी शैली से उद्भूत लिपियन के नाँव ह – 1. गुप्त लिपि, 2. कुटिल लिपि, 3. शारदा, 4. बंगला, 5. प्राचीन नागरी आदि। फेर दक्षिणी शैली से निःसृत लिपियन के नाँव ह– 1. पश्चिमी 2. मध्य–प्रदेशी, 3. तेलगु–कन्नड़ी, 4. ग्रंथ लिपि, 5. तमिल लिपि, 6. कलिंग लिपि आदि।

भोजपुरी कैथी लिपि ब्राह्मी लिपि के उत्तरी शैली के प्राचीन नागरी लिपि से निःसृत भइल ह। एकरा दक्षिण में नन्दी नागरी भी कहल जाला। ई 8वीं से 16वीं शताब्दी तक प्रचलित मानल जाला। प्राचीन नागरी के पूर्वी शाखा से बंगला, उड़िया, असमी आदि के विकास भइल ह आ एकरा पश्चिमी शाखा से महाजनी, राजस्थानी, गुजराती, कैथी आदि लिपियन के विकास भइल ह। ई कैथी लिपि के अंतर्गत बिहारी भाषा सभन के भोजपुरी कैथी लिपि, मगही कैथी लिपि आ मैथिली कैथी लिपि भा मिथिलाक्षर भा तिरहुतिया लिपि भी आबेलन सन।

2.3 भोजपुरी भाषा आ कैथी लिपि

भोजपुरी भाषा का आरंभिक लिपि कैथी लिपि ह। एह क्षेत्रन में खास कके बिहार प्रांत के भोजपुरी भाषा–भाषी क्षेत्र में एहि कैथी लिपि में भोजपुरी लिखल जात रहे। ओह काल में शिक्षा के प्रचार–प्रसार कम रहे। दूर–दूर के गाँवन में केहू–केहू पढ़ल–लिखल मिल जात रहे। ओकरा से चिट्ठी–पतरी लिखाबे–पढ़ावे खातिर लोग कोसन पइदल चलिके जात रहन जा। ओह समइया देवनागरी लिपि के प्रयोग भोजपुरी भाषा–भाषी क्षेत्र में ना रहे। लोग भोजपुरी के आपन भाषा आ कैथी लिपि के आपन लिपि मानि के प्रयोग करत रहन सन। कैथी लिपि सभ के आतमा से ओह समइया जुड़ल रहे। एहि में ओह लोगन आपन संस्कृति छिपल देखत रहे।

जवना तरे भाषा के उत्पत्ति का बारे में कवनो निश्चित मत का प्रतिपादन कइल कठिन बा, उहे तरे लिपि के उत्पत्ति का बारे में भी कवनो निश्चित मत का प्रतिपादन कइल कठिन बा। दूनों का विषय में विद्वान लोकनि खाली अनुमान का आधार प आपन मत का प्रतिपादन कइले बानी बाकिर सभका मत अंशतः ही ठीक बा। कवनो मत के सर्वग्राह्य नइखे कहल जा सकेला। फेर इहो मत विवादास्पद ही लागता कि पहिले देवनागरी लिपि आइल रहे इया कैथी लिपि। अतना स्वीकारल जा सकेला कि दूनू के बीच कवनो ना कवनो निकट का संबंध अवश्य ह। दूनू के स्वरूप–विवेचन का अनुशीलन कइला प अतना तो कहल जा सकेला कि दूनू के बीच साम्य अधिका ह, वैषम्य कम ह।

हमार समझ से अतना स्वीकारल जा सकेला कि कवनो भाषा के संबंध मानव–जीवन से होला बाकिर लिपि के संबंध मानव–सभ्यता आ संस्कृति से होला। जइसे–जइसे मानव–सभ्यता का विकास होइत गइल, ओइसे–ओइसे मानव–संस्कृति का विकास होइत गइल आ जइसे–जइसे मानव संस्कृति के विकास होइत गइल, ओइसे–ओइसे कवनो भाषा के लिपि के विकास होइत गइल। विकसित संस्कृति विकसित लिपि के सूचक ह। फेर विकसित लिपि विकसित संस्कृति के वाहक ह। विकसित संस्कृति के विकसित भाषा के लिपिबद्ध करे खातिर विकसित लिपि के उद्‌भव भइल ह। कैथी लिपि आ देवनागरी लिपि एकर श्रेष्ठ उदाहरण ह। आइयो कतना अइसन अनपढ़ आदमी बाड़न जा जिनका लगे आपन भाषा त बडुए बाकिर उनुका लगे लिपि नइखे। उनको लगे भाषा के ग्यान बाटे बाकिर कवनो लिपि के ग्यान नइखे। उनुका लिखे–पढ़े से कवनो मतलबे नइखे बाकिर बोले बतिआये खातिर आपन भोजपुरी मातृभाषा ह। कैथी लिपि आ भोजपुरी भाषा–भाषी लोगन के बीच आझ अइसन उदाहरण भरल–पड़ल ह। जवना काल में एह भाषा–भाषी क्षेत्र में भोजपुरी कैथी लिपि के प्रचलन रहे, तवना काल में एह भाषा–भाषी क्षेत्र में पढ़े–लिखे के बेसी प्रचलन ना रहे, अधिकांश लोग अनपढ़–निरक्षर रहे, पढ़ल–लिखल लोगन के संख्या सीमित रहे। एह चलते भोजपुरी कैथी लिपि सीमित लोगन तक सीमित रहल ह। इहे एकर बाधक तत्व ह।

आझ लिपि के जवन विकसित रूप हमनी का देखि रहल हईं जा, ओकरा देखि के लिपि के प्रारंभिक रूप क कल्पना कइल अवरू कठिन लागता। लिपि के इतिहास बताबता कि लिपि के भी विकास के सोपान बाटे। एकरा मुख्यतः हमनी का तीन रूप में देखि सकिला। एकरनाँव ह– 1. चित्र–लिपि, 2. भाव–लिपि आ 3. ध्वनि–लिपि। लिपि के विकास में ध्वनि–लिपि का आविर्भाव निश्चित रूप से मानव–सभ्यता–संस्कृति के सबसे बड़ उपलब्धि ह। चित्र–लिपि आ भाव–लिपि से आगा बढ़ि के एह में हर ध्वनि के अंकित करे के क्षमता विकसित भइल बा। कैथी लिपि आ देवनागरी लिए एकर गवाह ह। ई दूनो लिपियन के अविकास सभ्यता आ संस्कृति के विकास साथे ध्वनि–लिपि के रूप में भइल ह। ई ध्वनि–लिपि के सुस्थापित होखे में, एगो मानक रूप के निर्धारण में, न जाने कतना सौ बरिस के समय लागल होखी। श्रम आ समय के ई लिपि वाहक ह।

जहवाँ ले भोजपुरी भाषा के प्रारंभिक लिपि का सवाल ह त हमार बिहार में देवनागरी लिपि से पहिले कैथी लिपि में ही भोजपुरी भाषा लिखात रहे। ग्रामीण जनजीवन में प्रयुक्त ठेठ भोजपुरी के सउँसे ध्वनि के एकरा में लिपिबद्ध करे के क्षमता रहे। भोजपुरी भाषा–भाषी दोसर–दोसर प्रांत के भोजपुरियन लोग एह लिपि का प्रयोग करत रहीं इया ना, एकरा विषय

में हमरा कवनो जानकारी नइखे। अनुमान प आधारित कथन कहल उचित नइखे। बाकिर अतना त ध्रुव सत्य ह कि बिहार के सउँसे आ बड़हन भोजपुरी भाषा–भाषी क्षेत्र में एह कैथी लिपि व्यवहृत रहे। आरा, बक्सर, रोहतास, भभुआ, छपरा, सीवान, गोपालगंज, बेतिया, मोतिहारी आदि जिलन में एहि कैथी लिपि के प्रयोग होत रहे। ई जिलन के गाँवन के रह निहार लोगन कैथी लिपि में ही लिखत–पढ़त रहन सन। अक्षर ज्ञान से ल 'क' आगा के पढ़ाई तक एकरे प्रयोग होत रहे।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ई 'कैथी' शब्द क विकास 'कायस्थ' शब्द से भइल ह – कायस्थ–कायथ–कैथी। पुरान काल में एहिजा कायस्थ जाति के लोगन बेसी प्रबुद्ध रहन सन। दोसर जाति में पढ़े–लिखे के संचार ना रहे भा कम रहे। सभ से बेसी पढ़ल–लिखल जाति रहला के चलते कलमजीवी कायस्थ जाति के लोगन आपन–आपन लिपि बनवले रहन सन। आझुक शॉर्ट हैंड लेखा कैथी लिपि में लिखात रहे। बाकिर ओह लोग के मूअला भा ना रहला प एकरा दोसरा कवनो ना पढ़त रहे। कहे के मतलब बा जे ओकर लिखल सभ मसविदा ओकरे साथे हेरा जात रहे। एकरा से बचे खातिर एह कैथी लिपि के धीरे–धीरे एगो मानक रूप बनल, आझुक देवनागरी लिपि के वर्ण लेखा। ई बड़ श्रम साध्य कारज रहे। ओकरा बादे कैथी लिपि एक लेखा सगरो व्यवहृत होखे लागल। कायस्थ जाति के लोगन के पहिल बेर अपनयला के चलते एकर नामकरण कैथी लिपि पड़ल रहे। जमींदारी के काम–काज से ल'क', जमीन–जायदाद के बय–रेहन, चिट्ठी–पतरी के लिखाई–पढ़ाई, ग्यान–शिक्षा आदि सभ काम इहे कैथी लिपि में संपन्न होखत रहे। इ सभ काम अकेले कायस्थ जाति के लोग ही करत रहन सन। इहे चलते ई जाति के लोगन के मुंशी जी, मुनीवजी भी कहात रहे।

हमार बिहार में न खाली भोजपुरी भाषा के लिखे खातिर कैथी लिपि के प्रयोग होत रहे बलुक मगही भाषा आ मैथिली भाषा लिखे खातिर भी इहे कैथी लिपि के प्रयोग होत रहे। मैथिली कैथी लिपि के बाद में 'मिथिलाक्षर' नामकरण भी कइल गइल रहे। तइयो मिथिला भाषा–भाषी कर्ण कायस्थ जाति के लोगन एकरा कैथी लिपि ही कहत रहीं। प्रबुद्ध ब्राह्मण जाति के लोगन 'मिथिलाक्षर' शब्द के प्रयोग बेसी करत रहीं। ई दूनो के बीच के विवाद के दूर करे खातिर एकर नाँव 'तिरहुतिया' भी पड़ल रहे। मगही कैथी लिपि आ भोजपुरी कैथी लिपि दूनो भाषा–भाषी क्षेत्रन में विवाद रहित रहे। खाता न बही, कायथ जे कही, सभे सही।

भोजपुरी कैथी लिपि लेखा मगही कैथी लिपि के भी आपन क्षेत्र में खूब प्रयोग होत रहे। दूनो के मानक रूप के निर्धारण भ' गइल रहे। भोजपुरी कैथी लिपि आ मगही कैथी लिपि में अधिका साम्य रहे। आ ई दूनो मैथिली कैथी लिपि से सर्वथा भिन्न रहे। टंकण में ई तीनू कैथी लिपि के ना अइला के चलते आझ ई तीनू कैथी लिपि इतिहास के वस्तु भ'गइल ह। तीनू के लिखनिहार आ पढ़निहार लोगन अब अंगुरी प गिनात बाड़न सन। आझ ई तीनू लिपि लुप्त प्राय भ'गइल ह। कवनो–कवनो जगहा प बड़ मुश्किल से कउनो बूढ़–पुरनिया लोग भेंट जालन जवना के ई कैथी लिपियन के ग्यान होखेला। ई चलते आझुक वैज्ञानिक समइया में भी ई कैथी लिपि के संरक्षण होखे के चाहीं काहे कि कतना पुरान पांडुलिपि एह कैथी लिपि में ही हाथ से लिखल राखल बाटे।

पुरानकालीन भारत में दूगो लिपियन के प्रचलन रहे– 1. ब्राह्मी लिपि आ 2. खरोष्ठी लिपि। ब्रह्मा के दिहल ग्यान से उपजल लिपि के ब्राह्मी लिपि मानल जाला आ खर (गदहा)

के ओष्ठ (ओठ) से उपजल लिपि के खरोष्ठी लिपि मानल जाला। सम्राट् अशोक के पहिले भारत देश में खरोष्ठी लिपि के प्रमाण नइखे। ई भारतीय ना विदेशी लिपि ह आ अफगानिस्तान, ईरान आदि सीमावर्ती क्षेत्रन में एकर व्यवहार होत रहे। सम्राट् अशोक के समय ई क्षेत्र मगध साम्राज्य के अधीन रहे। इहे चलते इनकर कतना अभिलेख खरोष्ठी लिपि में लिखाइल मिलेला। भोजपुरी कैथी लिपि ब्राह्मी लिपि से उद्भूत ह। देवनागरी लिपि से भिन्न भइला के बादो भोजपुरी कैथी लिपि में ओकरा से किछु साम्यता के दर्शन भ' जाला। अब इहो प्रश्न उठल स्वाभाविक बा कि पहिले देवनागरी लिपि रहे भा भोजपुरी कैथी लिपि। बिहार के भोजपुरी भाषा–भाषी क्षेत्र में जहिया देवनगारी लिपि व्यवहृत ना रहे, तहिया भोजपुरी कैथी लिपि का प्रयोग धड़ल्ले से होत रहे। एकर ग्रामीण क्षेत्रन में केहू देवनागरी लिपि के ना जानत रहे बाकिर ऊ लोगन भोजपुरी कैथी लिपि में आपन सब काम करत रहन सन। देवनागरी लिपि में टंकण के सुविधा भइला के चलते लोग एकरा अपना लिहल आ भोजपुरी कैथी लिपि के धीरे–धीरे बिसर गइलन सन। भोजपुरी कैथी लिपि के ठेलि के ओकर जगहा पर देवनागरी लिपि बइठल ह।

भोजपुर क्षेत्र के सासाराम (जिला रोहतास) के रहनिहार शासक रहीं शेरशाह सूरी। ऊहाँ के मुगल शासक हुमायूँ के चौसा के युद्ध में हरवले रहीं आ दिल्ली सल्तनत के बादशाह बनल रहीं। ऊहाँ के बेशी पढ़ल–लिखल ना रहीं। उनुकर बचपन के नाँव फरीद खाँ रहे। ऊहाँ के एगो शेर के साथ मुठभेड़ में मूआ घालले रहीं। उहे समइया उनुकर नाँव शेर खाँ पड़ल रहे। ऊहाँ के भोजपुरी कैथी लिपि लिखे–पढ़े के जानत रहीं। अनुकर जनम स्थान सासाराम में ओह समय भोजपुरी कैथी लिपिये के प्रचलन रहे। लोग हाथ से एह लिपि में लिखि के आपन काम चलावत रहन। शेरशाह भी एहि लिपि के जानत रहीं। ऊहाँ के भोजपुरी कैथी लिपि के आपन राजकाज, शासनादेश आदि के लिपि बनवले रहीं। 1540 ई॰ के आसपास ऊहाँ के एह भोजपुरी कैथी लिपि के प्रयोग आपन सरकारी कामकाज में कइल प्रारंभ क'देले रहीं। ऊहाँ के सरकारी अदालती कामकाज, राजा टोडरमल से जमीन के पैमाइश, बंदोवस्ती, खरीद–बिक्री, डाक–सेवा, यातायात, सराय आदि में एह कैथी लिपि के प्रयोग कइले रहीं। ऊहाँ के ग्रैंड–ट्रंक रोड बनबइले रहीं जेकरा दूनो ओरिया जगहा–जगहा पर कैथी लिपि में लिखल राजधर्म सनेस के तख्ती टँगबइले रहीं। एह सब से पता चलेला कि भोजपुरी कैथी लिपि के प्रयोग कतना पुरान आ प्रामाणिक ह। इनकर संरक्षण में भोजपुरी कैथी लिपि के उत्तरोत्तर विकास भइल रहे।

1915 ई॰ में बक्सर से एगो पखबारा समाचार पत्र–पत्रिका कैथी लिपि में प्रकाशित भइल रहे। एकर नाँव रहे – 'बगसर समाचार'। एकर संपादक रहीं बाबू जय प्रकाश नारायण। कैथी लिपि में लिखल रहला के चलते पहिले ई पत्रिका हाथे से लिखा के बँटात रहे। बाद में दिक्कत भइला प एकर लिपि देवनागरी क दिआइल रहे।

भिखारी ठाकुर आपन रचना सभ 'बिदेसिया', 'गबर घिचोर', 'बेटी बेचबा' आदि के भोजपुरी कैथी लिपि में ही लिखले रहीं। आझो गाँवन में एकर जानकार लोग एहि लिपि में किछुओ लिखेलन। ई से लागेला कि एह लिपि के प्रचार–प्रसार आपन समइयाँ में खूब भइल रहें।

1857 ई॰ में बाबू कुंवर सिंह के नेतृत्व में बिहार में अंग्रेजन के खिलाफ युद्ध लड़ल जात रहे। एकरा ईस्ट इंडिया कंपनी के अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ पहिला स्वाधीनता आंदोलन भी कहल जाला। बाबू कुंबर सिंह, झाँसी के रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, नाना साहेब आदि एह में प्रमुख सेनानी रहीं। एह युद्ध में देवनागरी लिपि में ना, भोजपुरी कैथी लिपि में बाबू कुंवर सिंह वीर लोगन के युद्ध लड़े खातिर नेवता भेजत रहीं। ऊहाँ के भोजपुरी कैथी लिपि जानत रहीं। ऊहाँ के जगदीशपुर, बिहिया अंचल, जिला–आरा के एगो जमीन्दार रहीं। अनुकर जमीन्दारी के सभ काम भी एहि भोजपुरी कैथी लिपि में होत रहे। एह कारज खातिर ऊहाँ के कतना कायथ मुनीव नियुक्त कइले रहीं।

अंगरेजी राज में भोजपुरी क्षेत्र के ढेर मनी लोग सैनिक–सिपाही में भर्त्ती रहन सन। तनिका–मनिका पढ़ल लोग एहि लिपि में लिखल आवेदन आपन अंगरेज अधिकारी के पास देत रहन। कहे के मतलब बा कि अंगरेजी हुकूमत के समइया भी भोजपुरी कैथी लिपि प्रचलित रहे।

गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) के एगो भाषाविद् डॉ॰ राम नारायण तिवारी कैथी लिपि के उत्पत्ति पर गंभीर चिंतन–मनन कइले बानीं। ऊहाँ के अनुसार एह कैथी लिपि के उत्पत्ति पूर्वी छोर से 7वीं शताब्दी के आसपास भइल रहे। भोजपुरी के पूर्वी क्षेत्र में मगही क्षेत्र पड़ेला। 7वीं शताब्दी सिद्ध काल के ह। सरहपाद एकर आदि कवि बानीं। प्राचीन मागधी अपभ्रंश से ही भोजपुरी आ मगही दूनो भाषा के उत्पत्ति भइल ह। स्वाभाविक ह कि दूनो के लिपि भी एके जगहा से उद्भूत भइल होखे। भोजपुरी कैथी लिपि आ मगही कैथी लिपि में बहुत साम्य ह। एह से इनकर कथन के पुष्टि भी हो जाला। पूर्वी छोर से ही एकर उत्पत्ति भइल ह।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

2.4 भोजपुरी कैथी लिपि वर्णमाला

हिन्दी स्वर वर्णः अ आ इ ई उ

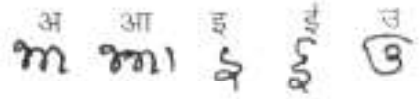

कैथी लिपि स्वर वर्णः

ऊ ए ऐ ओ औ

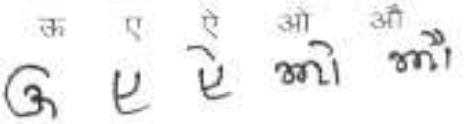

हिन्दी व्यंजन वर्णः क ख ग घ ङ

कैथी लिपि व्यंजन वर्णः

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

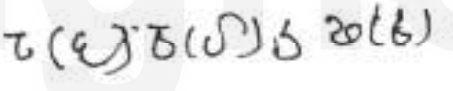

त थ द ध न

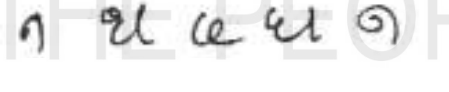

प फ ब भ म

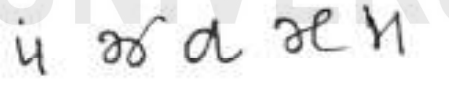

य र ल व श

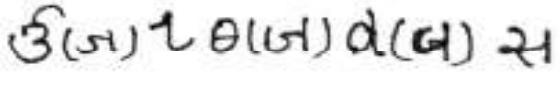

ष स ह

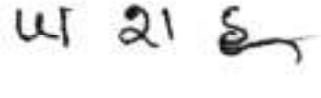

2.5 आदर्श लिपि आ भोजपुरी कैथी लिपि

भोजपुरी कैथी लिपि एगो आदर्श लिपि ह। एकरा में आदर्श लिपि खातिर जेतना गुण होखे के चाहीं, सभ उपलब्ध बा। एह में ध्वनि आ लिपि में सामंजस्य ह। दोसर शब्दन में आदर्श लिपि के सभ से बड़ विशेषता होखेला कि जवन बोलल जाला, तवन लिखल जाला। भोजपुरी कैथी लिपि में एकर उपलब्धता बाटे। फेर एक ध्वनि खातिर एक्के संकेत होखे के चाहीं। ई आदर्श लिपि के दोसर महत्त्वपूर्ण गुण होखेला। भोजपुरी कैथी लिपि में इहो गुण उपलब्ध ह। एहिजा ध्वनि आ संकेत में निश्चितता ह। रोमन लिपि में एगो ध्वनि खातिर अनेक संकेतन के प्रयोग होखेला। जइसे 'क' ध्वनि ला King, Kite, cat, character, queen, ox... अनेक संकेत बाटे बाकिर भोजपुरी कैथी में अइसन नइखे। 'क' के मतलब 'क', 'स' के मतलब 'स'....। एतने न रोमन में एक संकेत से केतना ध्वनियन के अभिव्यक्त कइल जाला। जइसे – एगो 'a' से आठ गो ध्वनियन के अभिव्यक्त कइल जाला – Rat, Ball, many, fare, made, was, steward। इहे तरे उर्दू में एगो 'ज' खातिर जीम, जाद, जो, जाल ई चार गो संकेत के काम में लाबल जाला। भोजपुरी कैथी में एकरा खातिर भिन्न संकेतन (` ा, ै, ˙) के प्रयोग कइल जाला। ई से भोजपुरी कैथी लिपि एगो आदर्श लिपि ह।

आदर्श लिपि में कवनो भाषा के सभ ध्वनियन के अंकित भा लिपिबद्ध करे के क्षमता होखे के चाहीं। भोजपुरी कैथी लिपि में अइसन क्षमता भी ह। एहिजा महाप्राण आ अल्प प्राण दूनो ध्वनियन के अंकित करे के क्षमता ह। रोमन आ उर्दू में अइसन ना ह। फेर लिपि के सुपाठ्य आउर संदेह रहित भी होखे के चाहीं। भोजपुरी कैथी लिपि में सुपाठ्यता ह आउर एकरा में कवनो संदेह भी ना रहेला। सौन्दर्य भी एह लिपि में खूभे बा। इहो आदर्श लिपि खातिर एगो गुणे ह। पहिले आशुलेखन के तरे एकर प्रयोग होत रहे। जवन लिखत रहे, उहे ओकरा पढ़त रहे, दोसर कवनो ना। इहो आदर्श लिपि के एगो गुण होखेला। बाद में भोजपुरी कैथी लिपि के मानक रूप के निर्धारण भइल रहे, तब आशुलेखन बंद भ गइल। भोजपुरी कैथी लिपि में मुद्रण आ टंकन के सुविधा विकसित ना भइल ह। इहे चलते ई लिपि लुप्त भ गइल ह। ई आदर्श लिपि के बाधक तत्व ह। बाकिर एकरा छोड़ि के आउर सभ आदर्श लिपि के गुण एहिजा उपलब्ध बा। ई चलते एकरा आदर्श लिपि मानल जा सकेला।

2.6 भोजपुरी कैथी लिपि : प्रासंगिकता आ महत्त्व

पुरान भोजपुरी भाषा–भाषी क्षेत्र में पुरखन द्वारा बनाबल भोजपुरी कैथी लिपि, जे अब लुप्त भ गइल ह, एकर प्रासंगिकता आ महत्त्व आझ असंदिग्ध ह। हमनी का पुरखन अथक श्रम, संसाधन आ हजारन बरिस के समय लगा के जवन लिपि के उद्‌भूत कइले रहीं, आझ ऊ लुप्त भ गइल ह। ओकर संरक्षण कइल जरूरी बा काहे कि एकर प्रासंगिकता आ महत्त्व, एकरा ना रहला प हमनी का बुझाता।

लिपि एक पीढ़ी के ज्ञान सामग्री के दोसर पीढ़ी तक ले जाला। ई सभ्भे बाङ्‌गमय के अमरत्व भी प्रदान करेला। आझो पुरान काल के तरह–तरह के लिपियन में लिखल प्रस्तरन, शिलालेखन, अभिलेखन आदि के महत्त्व बा काहे कि एह में भाव, विचार, सनेस, युगीन समाज के सभ्यता आ संस्कृति अंकित बा। भोजपुरी कैथी लिपि में भी ई सभ के अंकन भइल रहे। आझ के नयकी पीढ़ी ओह ज्ञान से वंचित आ अपरिचित बा। ओकरा से ई नयकी पीढ़ी के

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ज्ञानवर्द्धन आ मार्गदर्शन हो सकेला। ओह में हमनी का पुरखन के आत्मा बसल बा। भोजपुरी कैथी लिपि के भुलाबल, पुरखन के आत्मा के दुखावल ह आ एकर संरक्षण उनुका लोगन के आतमा के जुड़ावल ह।

जइसे आझ मोहनजोदड़ो–हड़प्पा के खुदाई से मिलल वस्तुअन पर अंकित शब्द, चित्र आदि देखि–पढ़ि के ओह काल का बारे में जाने के उत्सुकता बढ़ि गइल बा, पाषाण युगीन गुफा सभ पर अंकित भित्ति–चित्र देखि के मन हरखित–गदगद हो जाला आ पढ़ताहर–देखताहर लोकनि के जिज्ञासा बढ़ि जाला, ओइसहीं भोजपुरी कैथी लिपि में लिखल पुस्तक के पांडु लिपियन के देखि के जिज्ञासा बढ़ि जाला। एही ई लिपि के प्रासंगिकता आ महत्त्व ह।

भोजपुरी कैथी लिपि में न जाने केतना विद्वान लोकनि, महापुरूष लोगन के विचार, भाव, सनेस आदि लिखि के राखल बा आ कवनो ओकर पढ़ निहार नइखन जा। जदि एह लिपि के पुनर्जीवित कइल जाय त ओह सभ के अध्ययन आ अनुशीलन भ सकेलां। एह लिपि में भोजपुर के वीर वांकुड़ा बाबू कुंवर सिंह, 1857 के क्रांतिदूत के लिखल सामग्री ह, भोजपुरी के शेक्सपीयर भिखारी ठाकुर के लिखल कृति ह, शहंशाह शेरशाह सूरी के लिखल भाव, विचार आ सनेस ह ओकरा पढ़ल ऐतिहासिक कदम ओरिया कदम ताल ह। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ कतना पत्र, सनेस एह में लिखाइल राखल बा जेकरा से ओह युगीन समाज के मनोभाव आक्रोश, राष्ट्रीयता आदि के पता हो सकेला। इहे सब कारण से भोजपुरी कैथी लिपि के प्रासंगिकता आ महत्त्व असंदिग्ध बा।

2.7 बोध–प्रश्न/अभ्यास के उत्तर

1.

1. लिपि केकरा कहल जाला? देवनागरी लिपि आ कैथी लिपि में का अंतर ह?
2. 'भोजपुरी भाषा का आपन लिपि कैथी लिपि ह।' ई कथन के सिद्ध करीं।
3. कैथी लिपि आझ काहे लुप्त भ गइल ह?
4. पुरान काल में कैथी लिपि में का–का लिखाइल रहे?
5. 'भोजपुरी भाषा आ कैथी लिपि' पर एगो सारगर्भित लेख लिखीं।

2. नीचे दिहल गइल प्रश्नन के संक्षिप्त उत्तर दिहीं–

1. कैथी लिपि कइसन लिपि रहे?

.....

.....

.....

2. शेरशाह सूरी शासक भइला पर कैथी लिपि खातिर का कइले रहीं?

.....

.....

.....

.....

3. भिखारी ठाकुर कैथी लिपि में का कइले रहीं?

.....

.....

.....

.....

4. कैथी लिपि में प्रकाशित पत्र–पत्रिका का बारे में लिखीं।

.....

.....

.....

.....

3. योग्यता–विस्तार

1. बिहारी भाषा के लिपियन का बारे में लिखीं।
2. भोजपुरी कैथी आ मगही कैथी में साम्य–वैषम्य बताईं।
3. कैथी लिपि के उत्पत्ति का बारे में बताईं।
4. भोजपुरी कैथी लिपि के वर्णमाला सीखीं आ आपन भाव लिखीं।

4. लिपि/भाषा अध्ययन

1. भाषा आ लिपि के उत्पत्ति का बारे में बताईं।
2. 'देवनागरी लिपि से कैथी लिपि के अहित भइल बा', सिद्ध करीं।
3. 'लिपि का विकास सभ्यता–संस्कृति का विकास से जुड़ल ह', सिद्ध करीं।
4. पुरान कालीन लिपियन पर प्रकाश डालीं।
5. शासक के संरक्षण में लिपि/भाषा के विकास होला, कइसे?

5. खाली जगहा के भरे खातिर कोष्ठ में दिहल सही शब्द चुनीं।

1. भोजपुरी भाषा ..... ही आरंभिक लिपि ह। (देवनागरी/कैथी)
2. पुरान कालीन भारतीय लिपि ..... ह। (ब्राह्मी लिपि/खरोष्ठी लिपि)
3. शेरशाह सूरी ..... के रहनिहार रहीं। (आरा/सासाराम)
4. 'कैथी' शब्द का विकास ..... शब्द से भइल रहे। (कायस्थ/क्षत्रिय)
5. विश्व विख्यात नालंदा विश्वविद्यालय ..... क्षेत्र में रहे। (भोजपुर/मगध)

उत्तरः 1. कैथी, 2. ब्राह्मी लिपि, 3. सासाराम, 4. कायस्थ, 5. मगध

2.8 उपयोगी पुस्तक के नाम

1. भोजपुरी–हिंदी–इंग्लिश शब्दकोश, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
2. The Rewriting Problems of Bhojpuri Grammar, Dictionary and Translation : Dr. Rajendra Prasad Singh, Navraj Prakashan, Bhajanpura, Delhi

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY